आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 27-03-2016 ● अंक-476 ● तारीख - 28 मार्च 2016, चैत्र कृष्ण - 5 ● सोमवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

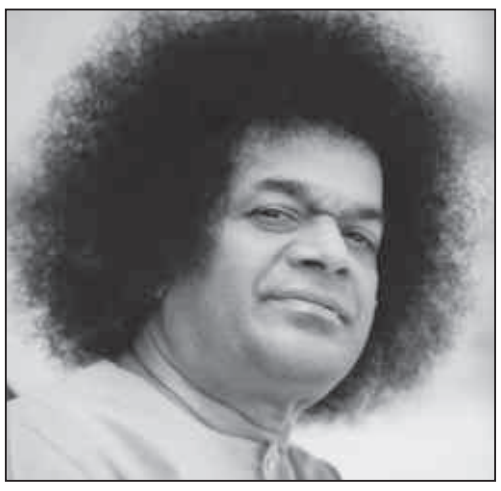

भगवान का विराट रूप

भगवान के विराट रूप के दर्शन के वही व्यक्ति अधिकारी हैं जो अपने अहम् को ईश्वरार्पण कर, ईश्वर की ही शरण लेते हैं (जैसे अर्जुन ने किया) तथा जो मौन भाव में ईश्वर द्वारा कही गई गीता को ध्यानपूर्वक ग्रहण करते हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है, वह विश्व के प्रत्येक प्राणी का अन्तःप्रेरक है। **–सत्य सांई बाबा**

चौपाई

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए।
भूषन बसन भूरि तिन्ह पाए।
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं।
मंगल कलस सजन सब लागीं।।

भावार्थ–सबसे पहले (रनिवास में) जाकर जिन्होंने ये वचन (समाचार) सुनाए, उन्होंने बहुत से आभूषण और वस्त्र पाए। रानियों का शरीर प्रेम से पुलकित हो उठा और मन प्रेम में मग्न हो गया। वे सब मंगल कलश सजाने लगीं।

दुनिया चले ना श्रीराम के बिना

दोहा – हनुमत तेरी धाक से,
तो गूंजे लंका कोट।
काज सँवारे राम के, तो धारे लाल लंगोट।।
दुनिया चले ना श्रीराम के बिना,
रामजी चले ना हनुमान के बिना।।
जबसे रामायण पढ़ ली है,
एक बात मैंने समझ ली है।
रावण मरे ना श्रीराम के बिना,
लंका जले ना हनुमान के बिना।।
दुनिया चले ना.....।।
लक्ष्मण का बचना मुश्किल था,
कौन बूटी लाने के काबिल था।
लक्ष्मण बचे ना श्रीराम के बिना,
बूटी मिले ना हनुमान के बिना।।
दुनिया चले ना.....।।
बैठे सिंहासन पर श्रीराम जी,
चरणों में बैठे है हनुमानजी।
मुक्ति मिले ना श्रीराम के बिना,
भक्ति मिले ना हनुमान के बिना।।
दुनिया चले ना....।।
सीताहरण की कहानी सुनों,
बनवारी मेरी जुबानी सुनो।
वापस मिले ना श्रीराम के बिना,
पता चले ना हनुमान के बिना।।
दुनिया चले ना.....।।

वृंदावन की विधवाओं ने पहली बार मंदिर में खेली होली

417 साल की रूढ़िवादी परंपरा पर आंसुओं से घुले गुलाल का रंग चढ़ गया। बेरंग जिंदगी जीने को मजबूर वृंदावन की विधवाओं ने पहली बार यहां के गोपीनाथ मंदिर में अपने ''कान्हा'' और उनके भक्तों के साथ जमकर होली खेली।

शंखनाथ, सूखे फूलों और हवा में उड़ते रंगों के बीच सभी बेडियां टूट गईं। सामाजिक सौहार्द्र का परिचय देते हुए संस्कृत के विद्यार्थी, विद्वान, स्थानीय लोग और पुजारी भी उनके साथ हो लिए। भक्ति का रंग इस कदर चढ़ा कि कोई भेदभाव ही नहीं बचा।

अपने परिवारों द्वारा त्याग दी गईं इन विधवाओं की इस होली में बड़ी संख्या में संस्कृत के विद्यार्थी और विद्वान भी शामिल हुए।

रंग-पंचमी

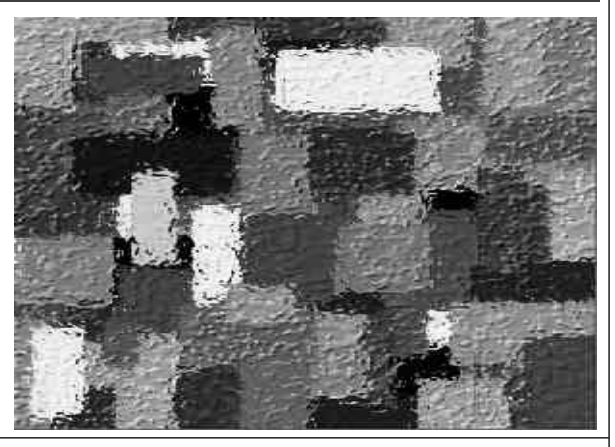

होली के बाद पंचमी के दिन रंग खेलने की परंपरा है। यह रंग सामान्य रूप से सूखा गुलाल होता है। विशेष भोजन बनाया जाता है जिसमें पूरनपोली अवश्य होती है। इस त्योहार का मतलब नाच, गाना और मस्ती होता है। ये मौसम रिश्ते (शादी) तय करने के लिये अच्छा होता है, क्योंकि सारे लोग इस त्योहार पर एक दूसरे के घरों को मिलने जाते है और काफी समय मस्ती में व्यतीत करते हैं। राजस्थान में इस अवसर पर विशेष रूप से जैसलमेर के मंदिर /महल में लोकनृत्यों में डूबा वातावरण देखते ही बनता है जब कि हवा में लाल नारंगी और फिरोजी रंग उड़ाए जाते हैं।

जयगढ़ दुर्ग

आमेर के खास ऐतिहासिक स्थलों में से एक है जयगढ़ किला। अरावली की पहाडियों में चील का टीला पर स्थित यह दुर्ग आमेर शहर की सुरक्षा को पुख्ता करने के लिए 1726 में महाराजा जयसिंह द्वितीय ने बनवाया था। बाद में उन्हीं के नाम पर इस किले का नाम जयगढ़ पड़ा। मराठों पर विजय के कारण भी यह किला जय के प्रतीक के रूप में बनाया गया। सुरक्षा के लिए किले पर तैनात जयबाण तोप दुनिया की सबसे बड़ी पहियों वाली तोप है। हालांकि इस तोप का इस्तेमाल कभी भी किसी युद्ध के लिए नहीं किया गया। लगभग पचास टन भारी और सवा छह मीटर लम्बाई की इस विशेष तोप को इसी दुर्ग परिसर में ही निर्मित किया गया था। तोप 50 किमी तक की दूरी पर निशाना साध सकती थी। यहां लक्ष्मी विलास, ललितमंदिर, विलास मंदिर और आराम मंदिर आदि सभी राजपरिवार के लोगों के लिए अवकाश का समय बिताने के बेहतरीन स्थल थे। इसके साथ ही महत्वपूर्ण बैठकों के लिए एक असेंबली हॉल सुभ्रत निवास भी था। जयगढ़ किला जयपुर की सबसे ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। जयगढ़ दुर्ग का रास्ता भी आमेर घाटी से होते हुए नाहरगढ़ जाने वाले रास्ते पर है। इतिहास और शोध के विद्यार्थियों के लिए यह दुर्ग अहम है।

नीम की पत्तियों से उपचार

पेट में कीड़े होने पर नीम की नई और ताजा पत्तियों का उपयोग करना चाहिए। नीम का पेड़ अनेक रोगों में फायदेमंद माना गया है। रोजाना नीम की चार–पांच कोमल पत्तियां चबाकर खाने से खून साफ होता है और कई बीमारियों से बचाव होता है।

1. चेचक का इंफेक्शन होने पर नीम के पत्तों को पानी में उबालकर नहाने से लाभ होता है।
2. फोड़े–फुंसियों पर भी नीम के पत्तों का लेप लगाने से फायदा होता है।
3. नीम के पत्तों को पीसकर इसकी गोली सुबह–शाम शहद के साथ लेने से खून साफ होता।
4. डायबिटीज के रोगी को नीम के पत्तों का रस पीने से लाभ होता है।
5. पेट में कीड़े होने पर नीम की नई व ताजा पत्तियों के रस में शहद मिलाकर चाटें।
6. दमे के मरीज को नीम के तेल की 20–25 बूंदे पान में डालकर खाने से राहत मिलती है।
7. नीम की सूखी पत्तियों का धुआं करने से घर में मौजूद बैक्टरिया नष्ट होते हैं।
8. शरीर पर होने वाली खुजली, खाज और सोरायसिस में राहत के लिए नीम के पतों को उबालकर उससे नहाएं।

अनन्नास करें रोगों का नाश

खट्टे–मीठे स्वाद वाला फल अनन्नास सेहत के लिए बेहद गुणकारी माना गया है। इसमे कई फलों के गुण मौजूद होते है। अनन्नास में विटामिन ए और सी, फाइबर, पोटाशियम, फॉस्फोरस, केल्शियम आदि प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। अनन्नास के नियमित सेवन से कई फायदे उठाए जा सकते हैं।

कोशिकाओं की क्षति पर रोकथाम– अनन्नास एंटीऑक्सीडेंट का समृद्ध स्त्रोत माने गए हैं। ये फ्री रैडिकल्स का खात्मा करके सेल्स को डैमेज होने से रोकते हैं। इससे कई प्रकार के कैंसर, हार्ट डिजीज और आर्थराइटिस आदि से बचाव होता है।

सर्दी जुकाम से रक्षा– विटामिन सी और ब्रोमेलेन की प्रचुर मात्रा मौजूद होने के कारण अनन्नास के सेवन से माइकोबियल इंफेक्शन तेजी से ठीक होती है। दवा के साथ–साथ अनन्नास का सेवन करने से सर्दी–जुकाम जल्दी ठीक हो सकता है। साइनस, गले की खराश, सूजन व गठिया में इसके सेवन से राहत मिलती है।

हड्डियों को मजबूती– एक कप पाइनैपल ज्यूस रोज पीने पर किसी वयस्क की दैनिक जरूरत का 73 फीसदी मैंगनीज मिल जाता है।

दृष्टि दोष में सुधार– पाइनैपल में मौजूद बीटाकैरोटीन आँखो की रोशनी बढ़ाता है।

एंटी इफ्लेमेशन का काम– आर्थराइटिस के दर्द से परेशान लोगों को नियमित अनन्नास का सेवन करने पर दर्द से राहत मिल सकती है।

रक्तचाप की रोकथाम – पोटेशियम की उच्च मात्रा एवं सोडियम की कम मौजूदगी अनन्नास को रक्तचाप के मरीजों के लिए फायदें वाला फल बनाती है।

पेट के कीड़े– पाइनैपल में पाचक एंजाइम ब्रोमेलैन आँतों के कीड़ों का खात्मा करता है।

जी मिचलाना– जी घबराने या जी मिचलाने की समस्या हो, तो उन्हें अनन्नास का रस पीना चाहिए।

अपनी रुचियों को पहचानें

आपको कार्य करते समय घड़ी धीमी चलती महसूस होती है, या तेज ? कार्य रुचिपूर्ण होगा तो समय जल्दी बीतेगा व अरुचिपूर्ण होगा तो दिन बड़ा महसूस होगा। रुचिपूर्ण कार्यों से थकान कम आती है, कार्य में निखार आता है। मस्तिष्क पर अनावश्यक तनाव नहीं पड़ता इसलिए रुचिकर कार्य से जुड़ने का प्रयास करें। किसी कलाकार को सुंदर कृति तैयार करते समय जो संतुष्टि मिलती है, उसकी पूर्ति धन से नहीं की जा सकती। बुतो रूस का प्रसिद्ध चित्रकार था। उसने कई सुंदर चित्र बनाए, किंतु एक भी बिका नहीं था। वहाँ के राजा को जब यह पता चला, तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने सोचा कि उसके देश का यह चित्रकार कहीं यह अफसोस लेकर नहीं मर जाए कि किसी ने भी उसके चित्र नहीं खरीदे। उसने दरबार से एक आदमी को कुछ राशि देकर चित्र खरीदने हेतु बुतो के पास भेजा। वह आदमी बुतो के पास गया और चित्र खरीदने का मंतव्य प्रकट किया। बुतो ने प्रसन्न होकर अपने चित्र उसके समक्ष प्रदर्शित किए। राजा के आदमी ने सरसरी नजर से सब चित्र देखे, फिर एक चित्र को पकड़ बोला, 'यह कितने का है ?' बुतो ने सोचा, – यह कैसा खरीददार है, जिसने चित्रों की अच्छी–बुरी समीक्षा किये बगैर चित्र को चुन लिया। बुतो को शंका हो गई, उसने उस आदमी का हाथ पकड़ लिया और पूछा, 'तुमको किसने भेजा है ?' राजा चुपके से यह सब देख रहा था। उसका आदमी कुछ बोले, उससे पूर्व ही राजा सामने आकर बोला, 'क्षमा करें, इसे मैंने भेजा है।' और उसने कारण बताया, तो बुतो ने कहा, 'राजन्, इन चित्रों को बनाते समय जो संतुष्टि मुझे मिली, उसकी पूर्ति किसी धन–दौलत के द्वारा नहीं हो सकती।'

मानव मन के बोल

कर्म ही पूजा है

गतांक से आगे.....

मैं आपको निवेदन कर रहा था पाली–मारवाड में एक बार में सेविंग बैंक में काउंटर पर पीछे बैठा था। हेड ऑफिस में सेविंग का कार्य और बढ़ा दिया था । तो एक रजिस्ट्री लेने के लिये एक डॉक्टर साहब आये, नमस्कार किया बोले – तीन दिन से पोस्ट मेन साहब मेरे घर रजिस्ट्री ला रहे है, पर मेरी ड्यूटी हॉस्पीटल में रहती है। और मैं घर पर नहीं रहता तो आप जरा मेरी बहुत जरूरी रजिस्ट्री आयी है, कृपा करके दे दीजिये। मैं एलोपैथिक डॉक्टर हूँ। अब वो हमारे रजिस्ट्री बाबू रूक गये, थोड़े बोले "डॉक्टर साहब रजिस्ट्री तो कल आपके घर पर ही लायेंगे।" आप कल 11–12 बजे घर पर मिल जायें।

उन्होंने कहा– भैय्या रजिस्ट्री बहुत जरूरी है मैं कल बाहर भी जा रहा हूँ। मैं डॉक्टर हूँ–भैय्या। अरे! डॉक्टर साहब क्या डॉक्टर हूँ, डॉक्टर हूँ। मैं कभी डॉक्टर के पास नहीं गया। मुझे कभी डॉक्टर की पास जाने की जरूरत नहीं पड़ी। आप डॉक्टर हूँ डॉक्टर हूँ। ये रोब मत बताये। मैं आज दिन तक बीमार नहीं पडा। मैं सुन रहा था। मैंने रजिस्ट्री तो उनको दिला दी। वो जब चले गये तो मैंने उस भैय्या को कहा। लाला अपन ने जो भी किया वो गलत है हमें ऐसा नहीं बोलना चाहिये कि मैं कभी बीमार नहीं पडा। बोले कैलाश जी वास्तव में आज तक मैं कभी बीमार नहीं पड़ा, आज तक मैंने कोई दवाई–गोली नहीं ली। अच्छी बात है। प्रभु कृपा करे आपको आगे भी दवा की जरूरत ना पड़े। लेकिन गर्व मत करो। ये साढ़े तीन हाथ की काया, ऐसा बर्तन है जो कभी भी टूट सकता है। ये कांच का बर्तन है। 10–15 दिन बाद वो कुछ टेबलेट खा रहे थे। मैंने कहा क्या हुआ? भाई साहब खांसी बहुत हो रही थी और मैं दो–तीन बार डॉक्टर के पास गया, और सिरप ने भी काम नहीं किया। गोली भी लेता हूँ और सिरप भी लेता हूँ।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

महात्मा बुद्ध के एक शिष्य ने राह चलते एक भिखारी को अपने पास बुलाकर उसे जीवन की निस्सारता का उपदेश दिया। परन्तु भिखारी कभी इधर देखता तो कभी उधर। जब शिष्य का उपदेश समाप्त हुआ तो वह भी अपनी राह चल पड़ा। शिष्य को बुरा लगा कि मधुर और प्रेरक उपदेश के बदले इस मूर्ख ने उसका आभार तक नहीं माना। शिष्य ने महात्मा बुद्ध से भी इस प्रसंग की चर्चा की और भिखारी को मूर्ख कह दिया। बुद्ध ने शिष्य से उस भिखारी को तुरन्त बुलाने को कहा। कुछ ही देर में शिष्य दीन–हीन भिखारी को ले आया। बुद्ध ने सबसे पहले उसके सिर पर हाथ फेरा और अपने पास बिठाकर प्रेमपूर्वक भोजन करवाया और विदा कर दिया। शिष्य हैरान था कि गुरुदेव ने बिना उसे कुछ कहे ही क्यों भेज दिया ? बुद्ध हैरान, शिष्य की ओर देख मुस्कराए और बोले उसके लिए उपदेश से ज्यादा जरूरी भोजन था। शिष्य यह सुन निरूत्तर हो गया। वह भिखारी की नहीं अपनी मूर्खता पर शर्मिन्दा था। तात्पर्य यह कि समाज के सुखी होने में ही व्यक्ति का सुख निहित है। जब तक समाज में एक भी अशक्त, दीन–हीन और पीड़ित है, तब तक किसी को अपने इर्द–गिर्द सुख का अम्बार जुटा लेने का भ्रम भी नहीं पालना चाहिए। सुख–शांति इसी में है कि प्रभु प्रदत्त इस जीवन और जगत में अपने कर्त्तव्यों का ईमानदारी से पालन करते हुए दीन–दुःखी, पीड़ित और निराश्रितों के लिए भी कुछ करें। अपेक्षाओं से निकटता कटुता का कारण बनती है। जब हम अपने से कमजोर के लिए सेवा का भाव लेकर आगे बढ़ेंगे तो प्रभु कृपा से सुख–समृद्धि ही हमारे द्वार पर दस्तक देने लगेगी। जैसे लकड़ी में व्याप्त अग्नि नहीं दिखाई पड़ती, वैसे ही परमात्मा दिखाई नहीं देता। जबकि परमात्मा ही इस समस्त जगत को लीला से प्रकट कर स्वयं दृष्टि रूप से देखता है। इसीलिए श्रुति का भी यही कहना है कि 'न दृष्टे दृष्टार पश्ये' अर्थात्–दृष्टि या दृश्य को नहीं, बल्कि दृष्टा को भी देखो, उसको जानो–समझो। वही आत्मा है, जो भीतर भी है और बाहर भी है। इस सूत्र के माध्यम से हमें अपनी श्रद्धा व साधना को सशक्त बना अपने आत्मबल का निर्माण करके उसे अन्तस में आत्मसात करना होगा जो सामाजिक सुख, शान्ति एवं सफलता का मूलमंत्र है। अतएव भीतर के मंथन से जो कुछ प्राप्त हो, उससे प्रेरित होते हुए बाहरी जगत में जीएं। परम सन्तोष मिलेगा और जीवन का कल्याण सुगम हो जायेगा।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित नि:शुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्र.स.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1.	सतीश	सुभाष	25	पुरूष	सिरमौर	हिमाचलप्रदेश
2.	जीतू चौधरी	लक्ष्मण	28	पुरूष	पटना	बिहार
3.	शान्ती लाल	पुर्तिलाल	28	पुरूष	सीतापुर	उत्तरप्रदेश
4.	सुशील	बिधी चन्द	29	पुरूष	हमीरपुर	हि. प्रदेश
5.	संजय कुमार	मलखान सिंह	30	पुरूष	फिरोजाबाद	उत्तरप्रदेश
6.	सुधांशू सिंह	भूरा सिंह	3	पुरूष	ओरैया	उत्तरप्रदेश
7.	अंश कुमार	सुनील कुमार	3	पुरूष	मैरठ	उत्तरप्रदेश
8.	आंचल कुमारी	मनोज कुमार	5	स्त्री	छपरा	बिहार
9.	खुशबू कुमारी	बालेश्वर साह	8	स्त्री	मधेपुरा	बिहार
10.	कमलेश कुमार	हरी सिंह	8	पुरूष	कुल्लू	हिमाचलप्रदेश

क्रमशः

फूलों की गंध –जीवन में सुगंध

आज फूलों का प्रयोग हम केवल माला बनाने पहनने व पहनाने के लिए औपचारिकता समझ कर काम मे लेते है लेकिन इन फूलों में अनेक गुण है।

गुलाब के फूल – फूलों को सूंघने से प्रेम की बढ़ोतरी होती है।

कमल के फूल – फूलों से आध्यात्मिक व मानसिक उन्नति होती है तथा अवसाद को दूर कर विचारों की शुद्धता व वाणी को सिद्ध करने में मदद मिलती है।

केसर की गंध से – बुद्धि, स्मरण शक्ति नेत्र ज्योति व शांति की वृद्धि होती है।

प्याज की सुगंध से – नकसीर ठीक होती है तथा गर्मियों में लू से मुक्ति मिलती है।

बिल्वपत्र के फूलों से – देवता और सूक्ष्म अज्ञात शक्तियां प्रसन्न होती है व आकर्षित होती है।

हजारा के फूल – सूंघने से नाक की फुंसियाँ दूर होती है।

चमेली के फूल से – मस्तिष्क शीतल होता है व डिप्रेशन में आराम मिलता है।

गुलमोहर के फूल से – लक्ष्मी की कृपा होती है तथा शरीर से थकान उदासी, कमजोरी व निर्बलता का नाश होता है।

चंपा के फूलों से – देखने मात्र से मन में प्रसन्नता होती है, क्रोध का नाश होता है व नकारात्मक सोच सकारात्मक हो जाती है।

सरसों के फूल – देखने मात्र से उच्च रक्तचाप में आराम मिलता है।

मिर्ची के फूल – बच्चों की नजर उतारने में काम आते है।

नीम के फूल – मधुमेह, मोटापा व पाइल्स को दूर करते है। इस तरह फूल चिकित्सा में बहुत उपयोगी होते है और आम रुप में उपयोग में लाए जाते है।

सम्राट ने किया शिल्पी की श्रमशीलता का सम्मान

सम्राट हर्षवर्धन के समक्ष एक वृद्ध को अभियुक्त की तरह पेश करते हुए दंडनायक ने कहा – महाराज, इसने आपकी शान में गुस्ताखी करते हुए राजकीय मर्यादाओं की अवहेलना की है।'' यह सुन सम्राट ने पूछा– ''क्या किया है इसने?'' दंडनायक ने कहा – 'जब सम्राट की सवारी इसके दरवाजे के सामने से गुजरी, तब भी यह खड़ा नहीं हुआ। इसने महाराज की अभ्यर्थना और स्वागत – सत्कार तो दूर की बात, आंखें उठाकर तक नहीं देखा।''

यह सुनकर सम्राट हर्ष हल्के – से हंसे और बोले – 'तुम जिसे स्वागत – अगवानी, राजकीय– मर्यादा कहते हो, हो सकता है कि इस साधरणजन को उसका कोई बोध ही न हो।'' फिर उन्होंने वृद्ध को संबोधित करते हुए कहा – ' कहो भाई, तुम इस बारे में क्या कहते हो? क्या तुमको मैंने कोई

हानि पहुंचाई है? क्या तुम्हें मेरी किसी नीति से विरोध है?''

वृद्ध हाथ जोड़कर बोला– 'नहीं महाराज, ऐसा कुछ भी नहीं है। आपकी छत्रछाया में हमारा पूरा गांव प्रसन्न है। दंडनायक का कहना सच है। मुझसे अपनाध हुआ है, किन्तु मैंने यह जान– बूझकर नहीं किया।'' सम्राट हर्ष उसकी बात सुन स्नेहपूर्ण स्वर में बोले – तुम्हारे जैसे वृद्ध हर्षवर्धन के स्वागत में खडे रहें, इसका कोई औचित्य नहीं। वैसे काका, उस समय तुम कर क्या रहे थे?

वृद्ध बोला – मैं काष्ठ पट्टिका में शिव का चित्र उकेर रहा था। मुझे भान ही नहीं हुआ कि आपका आगमन हो रहा है। यह सुनकर सम्राट हर्ष ने कहा – ओह, तो तुम शिल्पी हो। तुम इस दर्जे के कलाकर हो कि काम की तन्मयता में बहिर्जगत को भूल जाते हो। बाहर की हलचलें तुम्हारा ध्यान भंग नहीं कर पाती। श्रम – साधना की यही तो खासियत है और तुम इससे भूषित हो। क्या नाम है तुम्हारा? वृद्ध ने बेहद संकोच के साथ कहा – दीनू!

यह सुनते ही सम्राट हर्ष बोले – 'ओह, तो आप हैं शिल्पी दीनू। आर्य, अपराध तो आपसे नहीं राज– कर्मचारियों से हुआ है।'' सम्राट के इस कथन से कभी अचरज में थे, लेकिन सम्राट कहे जा रहे थे – 'राज्यसत्ता की मर्यादा से श्रम की मर्यादा कहीं अधिक है। सम्राट राज्य का सेवक और रक्षक भर है, लेकिन श्रम साधक उसका निर्माता है।'' इसके बाद उन्होंने शिल्पी दीनू को उचित पुरस्कार व सम्मान देकर वहां से विदा किया।

अमृत–बिन्दु

- 'कुछ लोग प्रतिभा और ज्ञान की कमी से कभी नहीं हारते, बल्कि जीतने से पहले ही हार स्वीकार कर लेते है।''
- ''इस पथ का उद्देश्य नहीं है, शान्त भवन में टिक रहना। लेकिन पहुँचना उस सीमा पर, जिसके आगे राह न हो''। ।
- ''जितना समय हम किसी कार्य की चिंता में लगाते हैं, यदि उतना ही समय हम उस कार्य को करने में लगाएं तो चिंता जैसी कोई चीज ही नहीं रह जाएगी।''
- ''जीवन एक गणित है। जिसमें दोस्तों को जोड़ा जाता है दुश्मनों को घटाया जाता है और दुःखों का भगा दिया जाता है।''

मुट्ठी में तकदीर हमारी

गतांक से आगे.....

श्रीनारायण बाबू, जूनागढ़ वाले हो ना आप, हम अयोध्या वाले है। द्वादश ज्योर्तिलिंग वाले हैं। सोमनाथ महादेव की कृपा के दर्शन कीजियेगा आप धन्य हो जायेंगे। जब मैं वहाँ दर्शन करने गया, मैंने अपने आप को बहुत धन्य अनुभव किया। आप द्वारिकाधीश जाईये, द्वारिकाधीश की जय–जयकार कीजिये। आप अयोध्या जी में पधारिये, रामलला के दर्शन कीजिये। आप वृन्दावन में जाईये, कृष्ण भगवान की कृपा को प्राप्त कीजिये। बरसाने में जाईये, जय श्री राधे, राधे, राधे और ऐसे देश के वासी हैं। आप इंसानियत को अपना लीजिये। अभी मुझे कोटड़ा याद आ रहा है। जिस कोटड़ा में यज्ञ करवा रहे थे, जल का छींटा दिया।

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्यां गतोन्पि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स ब्राह्यभ्यन्तरः शुचिः।।

विष्णु भगवान का स्मरण किया और जब हमने कहा अतः अक्षितायः नमः, अतः च धनाय नमः, अतः गद्याय नमः और जैसे कहा– दक्षिणाय नमः, पिता ने कहा– बेटा 100 रूपये है क्या ? चाचा ने कहा– भतीजे 5 रूप्ये दक्षिणा दे दे। दादी जी ने कहा– पोते पाँच रुपये रख दे। मैंने कहा आज तो दक्षिणा के रूप में देव दक्षिणा चाहता हूँ। ये 100 फिर ले लूँगा। आप देव–दक्षिणा के रूप में आपकी बुराई मुझे दे दीजिये। आप अच्छाई ग्रहण कर लीजिये। आप शराब छोड़ दीजिये। आप व्यसन छोड़ दीजिये। आप पान–मसाला छोड़ दीजिये। आप प्रातःकाल जल्दी उठना प्रारंभ कर दीजिये। मुझे आप की देव–दक्षिणा चाहिये। मुझे आपका धर्म चाहिये। मुझे आपका यज्ञ चाहिये। आप गो–ग्रास निकालिये। आप भोजन करने से पहले अपने कर कमलों को धो दीजियें। ऐसा जब कहा– कई लोगों ने कहा – हम शराब छोड़ते हैं। किसी ने कहा– ये पान–मसाला फैंक देता हूँ। किसी ने बीड़ी तोड़कर फैंक दी। किसी ने सिगरेट तोड़कर फैंक दी। एक भाई ने मेरे कान में कहा था– यहाँ हम दो सेठ हैं हमारे कोटड़ा में। दोनों सगे भाई है। पर किसी बात पर झगड़ा हो गया 12 साल में, 12 मुकदमें, एक–दूसरे पर दर्ज करवा दिये। बहुएं भी रोती हैं। आप इनमें प्रेम करा दीजिये। इनकी एकता करा दीजिये। मैंने कहा ये तो राम–भरत का मिलन हो जायेगा। मैंने कहा– जिन भरत जी के लिये वशिष्ट जी ने कहा–

उसके आशाय की, थाह मिलेगी किसको।
जन कर जननी ही, जान न पाई जिसको।।

भरत को कैकेयी ने जन्म दिया लेकिन वो पहचान नहीं पायी। ये भरत तो राम का प्यारा है। राम–भरत के प्यारे हैं और राम–भरत की कथा सुनी। मैंने कहा – दुश्मनी छोड़ दीजिये। छोटा भाई दौड़कर गया। बड़े भाई के चरणों में गिर पड़ा। कागजों को फाड़ दिया गया। वकीलों को कहा हमें अब आपकी जरूरत नहीं है। एक हो गये, एक बनेंगे। नेक बनेंगे। हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा। हम बदलेंगे, युग बदलेगा।

महिम जी– इस प्रसंग में गुरूजी ने दो भाई आपस में विवाद कर बैठे उनको मिला दिया। सत्संग के माध्यम से जीवन में कहते हैं कि अन्न के कण को और सत्संग के क्षण को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिये। सत्संग प्राप्त होता है तो जीवन में एक होते है नेक होते हैं और परमार्थ के शुभ कार्य करते हैं।

क्रमश :

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, लिण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, लिण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com